साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 08
August 2016

वेश्यावृत्ति के उत्पन्न होने के कारण व निवारण

राकेश कुमार
सुपुत्र श्री ओम प्रकाश
म.न.- 864, गली न.-2, न्यू प्रेम कॉलोनी,
कैथल रोड़, करनाल।

नारी के देह व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन की प्रवृत्ति वेश्यावृत्ति कही जाती है। वेश्या का व्यवसाय या तो विवशता, बेबसी के कारण होता है या समाज का गुण्डा तत्व बेबस और असहाय नारी को जबरदस्ती इसी पेशे में झोंक देता है। कमलेश्वर के 'अपना एकांत' की पहली कहानी 'मास का दरिया' वेश्यावृत्ति पर आधारित कहानी है। इस कहानी का इब्राहीम वेश्याओं का ठेकेदार है। वह चुस्त-दुरूस्त लड़कियों को छांटकर शहर के अच्छे हिस्सों में छोड़ आता था और वहाँ से महीने के महीने पैसे ले आता था। उसने अनेक वेश्याओं की शादी भी करवाई थी। 'मास का दरिया' कहानी की अनेक स्त्री पात्र जैसे– जुगनू, शहनाज, विलकीस, कलावती, तारा आदि पेशा करती हैं और अपने घर का खर्चा चलाती हैं। इनके पास मदन लाल, वर्कर, मनसू किरानी, कंवरजीत होटल वाला, सन्त राम फिटर आदि निम्न वर्ग के मेहनतकश लोग आते हैं और केवल पाँच दस रुपये देकर अपनी वासना पूरी करके चले जाते हैं।

वेश्याएँ व्यक्ति के मान-अपमान का कोई ध्यान नहीं रखती। विलकीस एक ऐसी वेश्या है जो अपने पास आने वाले हर व्यक्ति का अपमान करती है। खुद विलकीस का कहना था कि उसके पास से कोई बिना अपनी कमर पकड़े वापिस नहीं जा सकता। विलकीस को इसमें मजा भी आता था। आदमी को छोड़ते ही वह दरवाजे पर आकर

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 08
August 2016

खड़ी हो जाती थी। और इसे हराकर जाते हुए देखकर तालियाँ चटकाकर बड़ी ऊँची हँसी में हँसती थी और कहती थी कि बड़ा आया पहलवान का बच्चा।

दयनीय स्थिति

कमलेश्वर की 'मास का दरिया' कहानी में वेश्याओं की दयनीय स्थिति का चित्रण हुआ है। जुगनू के कमरे का चित्रण करते हुए कमलेश्वर कहते हैं– "तकिया निहायत गंदा था और चादर कुचले हुए चमेली के फूल की तरह मैली थी.....संकरी कोठरी में अजीब सी बदबू भरी हुई थी। कोने में ही कुछ चिथड़े भी पड़े थे। अलमारी की दीवार पर पैंसिल से कुछ नाम और पते लिखे हुए थे। सिनेमा के गीतों की कुछ किताबें एक कोने में रखी थी, उन्हीं के पास मरे हुए साँपों की तरह चुटीले पड़े थे।

अभावग्रस्त स्थिति का चित्रण

'मास का दरिया' कहानी में वेश्याओं की अभावग्रस्त और नितान्त अकिंचन दशा का चित्रण किया गया है। वे वेश्याएँ इतनी गरीब थी कि इनमें से "कलावती भूखों मरने की हालत में पहुँच गई थी।" वे वेश्याएँ इस स्थिति से बचने के लिए एक रात में कई ग्राहकों को करती थी, ताकि उनको पैसे के अभाव में भूखा न मरना पड़े। महानगर कृत्रिमता, औचारिकता और यांत्रिकता के केन्द्र बने हैं। पाश्चात्य प्रभाव ने व्यक्ति को अजनबी बना दिया है। प्रेम का अर्थ यौन-तृप्ति हो गया है। विवश, बेबस और लाचार स्त्रियाँ वेश्यावृत्ति करने को मजबूर हैं।

ठोस पहल के मायने

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 08
August 2016

हरियाणा में महिला आयोग का गठन किस उद्देश्य से किया गया था, उसकी अब तक की उपलब्धियाँ क्या रही, क्या वह अपनी सार्थकता सिद्ध कर पाया, क्या नारी सशक्तिकरण और बालिक संरक्षण के लिए उसके पास कोई कार्य योजना है, अब तक कितनी महिलाओं की शिकायतों का निपटारा उसके हस्तक्षेप से हुआ, क्या इसका अध्यक्ष अथवा उपाध्यक्ष पद राजनीतिक दायरे से बाहर निकल पाया?

देश में वेश्यावृत्ति को कानूनी मान्यता देने के प्रस्ताव के समर्थन में राज्य महिला आयोग उतर आना सवालों की संख्या में इजाफा करने वाला है। इसकी उपाध्यक्ष का कहना है कि वेश्यावृत्ति को वैध किया जाना समाज के लिए बेहतर होगा। उनके मुताबिक महिलाओं और खासतौर पर बच्चियों से छेड़छाड़ और दुष्कर्म की घटनाएँ लगातार बढ़ रही हैं, इसे देखते हुए हमारी सरकार द्वारा बड़ी पहल करने की आवश्यकता है। तो क्या वह वेश्यावृत्ति को कानून रूप देने को ही बड़ी पहल मानती है। देश में हरियाणा वह राज्य है जहाँ महिलाएँ अभी पूरी तरह पर्दे से बाहर नहीं आ सकी, स्थानीय निकायों में आरक्षण के बल-बूते पर पंच या सरपंच बनने के बाद भी वे सार्वजनिक बैठकों में घूँघट नहीं हटाती और उनका काम पति ही देखते हैं।

प्रदेश अब भी गाँव प्रधान है, अन्तर्जातीय विवाह पर ही गाँव से निकालने के खापों के फरमान जारी हो जाते हैं तो क्या किसी गाँव में वेश्यावृत्ति का अड्डा खोलने की अनुमति दी जा सकती है? क्या शहरों में भी लोग प्रदेश की सभ्यता और संस्कृति से खिलवाड़ करने की इज्जात देंगे?

हरियाणा में वेश्यावृत्ति को कानूनी मान्यता देने का विरोध

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 08
August 2016

राष्ट्रीय महिला आयोग के साथ हरियाणा महिला आयोग वेश्यावृत्ति को कानूनी मान्यता देने के पक्ष में है, लेकिन इस बात को लेकर खापों ने इनके खिलाफ मोर्चा खोल दिया है और खोल देना भी चाहिए। सतरोल खाप के प्रधान इन्द्र सिंह ने कहा कि हरियाणा महिला आयोग वेश्यावृत्ति की कानूनी मान्यता दिलवाने के पक्ष में हैं, जबकि महिला आयोग को चाहिए कि वो महिलाओं को जागरूक करके इस गंदगी से बाहर निकालने का काम करे और उनको समाज में इज्जत देकर कोई रोजगार का प्रबंध करें। जो स्त्री अशिक्षित है उसे शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित करें, क्योंकि शिक्षा ही हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जा सकती है। सतरोल खाप के प्रधान इन्द्र सिंह ने यह भी कहा कि– महिला आयोग सरकार के माध्यम से ऐसी महिलाओं को रोजगार दिलवाकर उन्हें इस नरक से बाहर निकाले। अगर कोई महिला बेबस होकर ऐसा काम उठाने पर मजबूर होती है तो खापों की शरण में आकर सहायता ले सकती है। इसके लिए खापें एक मुहिम चलाएगी और ऐसी महिलाओं को समाज में दोबारा से सम्मान के साथ रहने का मौका देगी।

उपसंहार

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि समाज से नारी के देह व्यापार द्वारा धनोपार्जन की प्रवृत्ति को समाप्त करके ही वेश्यावृत्ति को समाप्त किया जा सकता है और इसकी समाप्ति के लिए सबसे पहले हमारी सरकार, महिला आयोग आदि ने इसे कानूनी मान्यता न देकर इस गंदगी भरे व्यवसाय को बंद करने के उपाय निकालने चाहिए, ताकि हमारे समाज की सभ्यता और संस्कृति बनी रहे और जो भी नारी इस

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 08
August 2016

व्यवसाय में किसी कारण से जैसे– विवशता, बेबसी, लाचार से लगी हुई है। उसकी विवशता, बेबसी और लाचारी को भारत सरकार ने उसकी योग्यतानुसार कोई रोज़गार देने का काम करना चाहिए जिससे कमलेश्वर के कहानी संग्रह 'अपना एकांत' (मास का दरिया) कहानी की पात्र कलावती को भूखों मरने की हालत में नहीं पहुँचना पड़ेगा, विलकीस को अपने पास आने वाले व्यक्ति का अपना नहीं करना पड़ेगा और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से प्रेम के अर्थ यौन-तृप्ति नहीं होगा, बल्कि प्रेम का अर्थ भाई-चारा, मान-सम्मान और प्रेम होगा।

संदर्भ ग्रन्थ

1. कमलेश्वर के कहानी संग्रह, 'अपना एकान्त' में युगीन संदर्भ (मास का दरिया), पृ.- 11-13
2. कमलेश्वर, अपना एकांत (मास का दरिया), पृ.- 17-19
3. दैनिक जागरण, 2 नवम्बर, 2014
4. दैनिक जागरण, 2 नवम्बर, 2014
5. दैनिक जागरण, 2 नवम्बर, 2014